DSSSB PRT, TGT & PGT
Part(A+B)
SCHOLAR BATCH
हिन्दी
अलंकार
Part -3
LIVE 06-05-2024 09:00 AM

अतिशयोक्ति अलंकार - जहाँ किसी वस्तु, पदार्थ या कथन को लोक सीमा से बढ़कर प्रस्तुत किया जाए वहाँ अतिशयोक्ति अलंकार होता है

शुद्ध वर्तनी

- वह शर इधर गांडीव गुण से भिन्न जैसे ही हुआ।
धड़ से जयद्रथ का इधर सिर छिन्न वैसे ही हुआ।।

- पानी परात को हाथ छुओ नहीं अंखियन के अश्रुओं
से पग धोये।।

- बालों को खोलकर मत चला करो दिन में
रास्ता भूल जाएगा सूरज।।

- देख लो साकेत नगरी है यही, स्वर्ग से मिलने गगन में जा रही।

राजा दस हजार

- भूप सहस दस एकहिं बारा।
लगें उठावन टरत न टारा।।
- आगे नदियाँ पड़ी अपार, घोड़ा कैसे उतरे पार।
राणा ने सोचा इस पार, तब तक चेतक था उस पार।।
- हनुमान की पूँछ में लगन न पाई आग।
लंका सिगरी जल गई, गए निशाचर भाग।।

भ्रांतिमान अलंकार - जहाँ समानता के कारण एक वस्तु में दूसरी वस्तु का भ्रम हो वहाँ भ्रांतिमान अलंकार होता है।

इसमें निश्चयात्मक ज्ञान की प्राप्ति हो जाती है।

उदाहरण -

- उदाहरण – वृन्दावन विहरत फिरै राधा नन्द किशोर।
  नीरद यामिनी जानि संग डोलै बोलै मोर।।
- पेशी समझ माणिक्य को, वह विहग देखो ले चला।
  लाल रंग की मणि पक्षी मांस पेशी।।
- कपि कर हृदय विचार, दीन्ह मुद्रिका डारि तब।
  जानि अशोक अँगार, सीय हरषि उठि कर गहेउ।।
- नाक का मोती अधर की कान्ति से,

अनार

बीज दाड़िम का समझकर भ्रांति से,
देखकर सहसा हुआ शुक मौन है, तोता
सोचता है अन्य शुक यह कौन है।

तोता

[redacted]

अन्योक्ति अलंकार - जहाँ किसी वस्तु या व्यक्ति को लक्ष्य कर कही जाने वाली बात दूसरे के लिए कही जाए।

उदाहरण – वे न इहाँ नागर बड़े दिन आदर तौ आब।
फूलौ अनफूलौ भयों, गवँई गाँव गुलाब।।

सभ्य
असभ्य
लोगों

➤ स्वारथ सुकृत न सम्र बृथा, देखि विहग विचारि।
बाज, पराए पानि परि, तू पच्छीनु न मारे।।

लक्ष्य
राजा
अपनी प्रजा

[redacted]

➤ नहिं पराग नहिं मधुर मधु, नहिं विकास इहिं काल।
अली कली ही सो बंध्यों आगे कौन हवाल।।

विशेष प्रकार की कल्पना

विभावना अलंकार - जहाँ बिना कारण के ही कार्य हो जाए वहाँ विभावना अलंकार होता है।

उदाहरण -

- बिनु पद चले सुने बिनु काना,
  कर बिनु करम करे विधि नाना।
  आनन रहित सकल रस भोगी,
  बिनु वाणी वक्ता बड़ जोगी।

सन्देह अलंकार - जब किसी वस्तु में उसी के समान दूसरी वस्तु का सन्देह हो जाए और निश्चयात्मक ज्ञान की प्राप्ति न हो।

उदाहरण -

- नारी बीच सारी है कि सारी बीच नारी है।
  नारी की सारी है या सारी की ही नारी है।।
- यह मुख है या चन्द्र है।
- तारे आसमान के है या मेहबान बानि।

आतिशबाजी चमक

विरोधाभास अलंकार - जहाँ विरोध न हो फिर भी विरोध का आभास हो वहाँ विरोधाभास अलंकार होता है

उदाहरण -

(ना, न, नी, मत, मना करना, वर्जित, निषेध)

- या अनुरागी चित्त की गति समुझै नहिं कोय।
  ज्यों-ज्यों बूड़े श्याम रंग, त्यों-त्यों उज्ज्वल होय।।
- न खुदा मिला न बिसाले सनम
- न खुद सोया न मुझे सोने दिया
- जब से है आँख लगी तब से ना आँख लगी।
- यहां गाड़ी खड़ी करना मना है।

दृष्टान्त अलंकार - जहाँ उपमेय और उपमान तथा उनके साधारण धर्मों में बिम्ब-प्रतिबिम्ब का बोध हो।

उदाहरण –

- बसै बुराई जासु तन, ताही को सन्मान।

भलो भलो कहि छोड़िए, खोटे ग्रह जप दान।

(सन्मान होना और जपदान करना ये दो भिन्न भिन्न धर्म कहे गये है। इनमें बिम्ब-प्रतिबिम्ब भाव है।)

पाश्चात्य अलंकार (मानवीकरण अलंकार) - इसमें प्रकृति का चित्रण मानव के द्वारा किया जाता है।

उदाहरण -

दिवसावसान का समय

मेघमय आसमान से उतर रही है

वह संध्या सुन्दर परी-सी धीरे-धीरे-धीरे

प्रकृति सुन्दर परी के समान

प्रकृति

संध्या

* उभयालंकार ⇒ जो शब्द और अर्थ दोनों में चमत्कार की वृद्धि करते हैं।

शब्दालंकार

कजरारी अंखियन में कजरारी न लखाय।

कजरारी ↓ लोरी आंख

कजरारी ↓ काजल